वृत्तपत्राचे नांव :– दिव्य हिमाचल
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– सिमला
वृत्तपत्र पान क्र :– 3
दिनांक :–12/08/2006

यज्ञ में अग्निहोत्र का निहितार्थ

हिंदू धर्म में अत्यंत माना गया
5 अग्निहोत्र करने से मानसिक,
क शुद्धि हो जाती है। अग्निहोत्र
थ एवं मन प्रसन्न रहता है। जब
दू धर्म) कोई शुभ कार्य होता
के साथ अग्नि को आहुति दी
अग्निहोत्र किया जाता है, जैसे
एवं चूड़ाकर्म संस्कार पर, शादी-
प्रवेश के समय आदि कई शुभ
देकर देवताओं को संतुष्ट किया
में लिखा गया है– 'अग्निहोत्रिणे
ीत अग्निहोत्र करने से शत्रु नष्ट
नकाल में हमारे ऋषि-मुनि,
करने एवं असुरों से पृथ्वी की
करते थे। अग्निहोत्र की महत्ता
ाज भी है। आज भी कल्याण
तु अग्निहोत्र किया जाता है।
ें हवन के समय वेदमंत्रों द्वारा
दी जाती है, उसको ही कहते
में गृहस्थ के लिए पंच महायज्ञों
गया है। इन पंच महायज्ञों में ही
देवयज्ञ में यज्ञाग्नि प्रज्वलित कर
ा एवं उनकी कृपा प्राप्त करने के
ी है। यही अग्निहोत्र है। अग्निहोत्र
ेद में कहा गया है–

ों अग्निः प्रातः प्रातः सोमनस्य
ु दान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं

अग्नि हमें प्रत्येक सुबह एवं
ंति, उत्तम चित्त, संकल्प और
त्येक प्रकार की ऐश्वर्य दाता है।

हम तुम यज्ञ अग्नि ही प्रदीप्त करके अपने शरीर को पुष्ट करें।'

अथर्ववेद ही नहीं, बल्कि हिंदू धर्म के सभी महत्त्वपूर्ण धर्मग्रंथों में यज्ञ और अग्निहोत्र की महिमा और महत्त्व के बारे में बताया गया है।

'महानारायणीयोपनिषद्' में यज्ञ के संबंध में कहा गया है कि यज्ञ से ही देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त की थी। यज्ञ शत्रु को भी मित्र बनाने में सक्षम है। यज्ञ में सभी प्रकार के गुण पाए जाते हैं। अतः श्रेष्ठ जन यज्ञ को श्रेष्ठ कर्म कहते हैं। 'अग्निपुराण' के अनुसार, यज्ञ से देवताओं का अनुदान प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवत गीता में तो भगवान कृष्ण ने परमब्रह्म परमात्मा को ही यज्ञ में प्रतिष्ठित माना है– 'तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्'। सामवेद में अग्निहोत्र के महत्त्व के बारे में बताते हुए कहा है कि जो व्यक्ति अग्नि में भली प्रकार होम करते हैं, उन्हें उत्तम संतान, सद्बुद्धि और धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

अग्निहोत्र के महत्त्व को वेद-पुराण सहित, हिंदू धर्म के अन्याय ग्रंथों में ही नहीं बताया गया है, बल्कि जिन्हें हिंदू धर्म और ईश्वर की अवधारणा में विश्वास नहीं है, उन्होंने भी इसकी महत्ता को खुले मन से स्वीकार किया है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने यज्ञों में अग्निहोत्र को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए कहा है–

अग्निहुत्त मुखा यंत्रा, सावित्री छन्दंसो मुखम्।
राजा मुखं मनुष्याणं, नदीनं सागरीं मुखम्॥

अर्थात यज्ञों में अग्निहोत्र, छंदों में सावित्री, मनुष्यों में राजा और नदियों में सागर श्रेष्ठ है। अग्निहोत्र की महत्ता केवल धार्मिक और आध्यात्मिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि इसकी श्रेष्ठता और वैज्ञानिकता भौतिक तल पर भी प्रमाणिक होती है। विज्ञान के अनेक शोधों और परीक्षणों से यह साबित हो चुका है कि अग्निहोत्र मानव मन एवं शरीर को स्वस्थ रखने तथा वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने में सहायक होता है। अग्निहोत्र के यदि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभों को देखा जाए, तो कई प्रकार के लाभ भौतिक स्तर पर ही दिखाई पड़ने लगते हैं। उदाहरण के लिए अग्निहोत्र को प्रतिदिन करने से मानसिक शांति और आनंद की अनुभूति होती है, वायुमंडल तुष्टि-पुष्टिदायक तत्त्वों से सुगंधित एवं पूरित होता है, घर के वातावरण में हमेशा शुद्ध एवं पुष्टिकारक प्राणवायु उपलब्ध होती है। शुद्ध वातावरण में मन जल्दी स्थिर एवं एकाग्र होता है तथा मन का तनाव दूर होता है। रक्त संचार सुगमता से होने लगता है। हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं। अग्निहोत्र करने से उत्पन्न गैसों के प्रभाव से कई रोग दूर होते हैं। शरीर के त्वचा की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है, हृदय रोग में अत्यंत लाभ मिलता है। रक्त वाहिनी धमनियों का व्यास पूर्ववत् होने लगता है, जिससे रक्त संचार सुगम होता है। अधिक स्थायी रूप से नाड़ी संस्थान सबल बनकर कार्य करने लगता है। इसके अलावा भी अग्निहोत्र से अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ मिलते हैं।

माधवकांत मिश्र